ॐ श्री कमलनेत्र स्तोत्र ॐ

श्री कमलनेत्रकटि पीताम्बर अधरमुरली गिरिधरम्।
मुकुट कुण्डल कर लुकुटिया सांवरे राधेवरम्।१।

कूलयमुना धेनुआगे सकल गोपीअन के मनहरम्।
पीतवस्त्र गरुडवाहन चरण सुख नितसागरम्।२।

करत केलकलोल निशदिन कुंजभवनोजाागरम्।
अजरअमर अडोल निश्चल पुरषोतम अपरापरम्।३।

भजदीनानाथ दयालु गिरिधर कंसहिरणशिपु हरम्।
गलफूलमाल विशाललोचन अधिकसुन्दर केशवम्।४।

वंसीधर वसुदेव छलिया बलि छलियो हरिवामनम्।
जल डूबते गज राख लीनो लंका छेद्यौ रावणम्।५।

सप्तद्वीप नवखण्डचौदह भुवनकीनो रामजीएकपदम्।
श्रीद्रोपदा जी की लाजराखी कहालगे उपमा करम्।६।

भजदीनानाथ दयाालु पूर्णकरूणा मयकरूणाा करम्।
कविदत्तदास विलास निशदिन नामजपत नितसागरम्।७।

प्रथम गुरुजी के चरणबन्दौ यस्य ज्ञानप्रकाशितम्।
आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवितं शिवशंकरम्।८।

श्रीकृष्णकेशव कृष्णकेशव कृष्णयदुपति केशवम्।
श्रीरामरघुवर रामरघुवर श्रीरामजी रघुवर राघुवम्।९।

श्रीरामकृष्ण गोबिंद माधव वासुदेव हरिवामनम्।
मच्छकच्छ वराह नरसिंह पाहि रधुपति पावनम्।१०।

मथुरा में केशवराय विराजे गोकुलबाल मुकुन्दजी।
श्री वृन्दावन में मदनमोहन गोपीनाथ गोबिंद जी।११।

धनधान्य मथुरा धन्यगोकुल जहाँ श्रीपति अवतरे।

धनधान्य यमुनाका नीरनिर्मल ग्वालबाल सखावरे ।१२ ।

नवनीत नागर करतनिरतत् शिवविरञ्ची मनमोहितम् ।

कालिन्दी तट करत क्रीड़ा बाल अद्भुत सुन्दरम् ।१३ ।

ग्बालबाल सब सखा विराजे संग राधे भामिनी ।

वंसीवट तटनिकट यमुना श्रीमुरली की टेर सुहाविनी ।१४ ।

भज राधव रधुवंश उत्तम परम राजकुमार जी ।

सीताके पति भक्त श्रीपति जगतप्राण आधार जी ।१५ ।

जनकराजा प्रण राख्यो धनुष वाण चढ़ावही ।

सतीतो सीता नाम जाके श्रीरामचन्द्र प्रणामही ।१६ ।

जन्ममथुरा खेल गोकुल नंद के हरि नंदनम् ।

श्री बाललीला पतितपावन देवकी वसुदेवकम् ।१७ ।

श्रीकृष्ण कलिमल हरण सबके जो भजे हरिचरण को ।

भक्ति अपनी देहुमाधव देहुस्वामी श्रीभवसागरसे तरण को । १८ ।

श्रीजगन्नाथ जगदीश स्वामी श्रीबद्रिनाथ विश्वम्भरम् ।

श्रीद्वारिका के नाथश्रीपति कृष्णचन्द्र प्रणमाम्यहम् ।१९ ।

श्रीकृष्ण अष्टपद पढ़त निशदिन विष्णुलोक सहगच्छते ।

श्रीगुरु रामानंद अवतार स्वामी श्रीकमलनेत्र समाप्ते ।२० ।

हरिद्वार में हरि विराजे ऋषिकेश में भरत जी ।

तपोवन में तप्त लक्ष्मण देवप्रयाग रधुनाथ जी ।

तप्तकुण्डकी अधिकमहिमा सरसमहिमा तीनों लोकयश गावहीं ।

नरनारायण करतदर्शन आवागमन मिटावही ।

भजन हरिजीका करोरे साधोकरोरे सन्तोजिसके भजनसे उद्धारहों ।

पढ़ते सुनते करतजयजय श्रीभवसागर से पारहो ॥

॥ बोलिये श्री बांके विहारी लाल की जय ॥